ISSN No. 2349-4654
नाद - नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक वर्ष : 1, अंक : 2, दिसम्बर 2014

पंजाब का लोक संगीत वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

डॉ. जितेन्द्र कौर

एसोसिएट प्रौफेसर, संगीत विभाग (गायन), खालसा कॉलेज फॉर विमेन, अमृतसर

सार-संक्षेप

किसी विशेष सभ्यताचार व संस्कृति के परिचय, पहचान तथा गहन अध्ययन हेतू वहां का लोक संगीत एक महत्त्वपूर्ण स्त्रोत है। लोक संगीत लोक मानसिकता का वह दर्पण है जिसमें उस संस्कृति विशेष की सांगीतिक पूंजी के अतिरिक्त उसकी सामाजिक, राजनैतिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक तथा आर्थिक समाज के प्रत्येक पहलू की पृष्ठभूमि प्रतिबिम्बत होती है। पंजाब के लोक संगीत ने विश्व में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया हुआ है। परन्तु आजकल देखने में आ रहा है कि पश्चिमी प्रभाव के कारण ये अपना अस्तित्व धूमिल कर रहा है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है जिसे मानने से हम इन्कार नहीं कर सकते। परिवर्तनशीलता के कारण पुराने का टूटना एवं नए का जन्म लेना एक सर्वव्यापक सच्चाई है। शुरू से पंजाब में संगीत की कई धाराएं शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, सूफी संगीत, गुरमत संगीत प्रचलित थी। परन्तु आधुनिक समय में लोक संगीत का जो मंडीकरण हो रहा है उससे उसके स्वरूप में परिवर्तन आ रहा है। हर तरफ लोक संगीत में मिलावट हो रही है। गीतों में अंग्रेजी शब्दों का चलन, साजों के नाम पर इलैक्ट्रोनिक्स साज, नृत्य के नाम पर अंग्रेजी धुनों पर थिरकना ही शेष रह गया है। अगर यही हाल रहा तो हम जल्दी ही अपनी विरासत को खो देंगे। प्रस्तुत पत्र में लेखक के अवलोकन एवं कुछ विद्वजनों के साक्षात्कार लेने के पश्चात् यह बताने का प्रयत्न किया गया है कि ऐसे कौन से कारण हैं जिससे पंजाब का लोक संगीत बदल रहा है तथा वो कौन सी परिस्थितियाँ है जिनकी अवहेलना से ही हम अपने पंजाबी लोक संगीत को बचा सकते है।

शोध-पत्र

सदियों पहले पंजाब के लोगों ने जिस तरह खाने के लिए गेहूं तथा पहनने के लिए कपास की खेती कर जुलाहों से कपड़ा बुनवा लिया उसी प्रकारजीवन को सरस बनाने के लिए गीत भी बना लिए। लोक गीत किसी एक कवि ने किसी एक जगह पर बैठकर नहीं लिखे बल्कि कई-कई पीढ़ियां इसे जोड़ती संवारती, मांजती तथा चमकाती रहीं। अनंत काल से चली आ रही इस सांझी मेहनत ने इन्हें इतना पवित्र बना दिया कि ये हमारे जीवन के अभिन्न अंग बन कर रह गए।[1]

लोक शब्द का अर्थ समस्त मानव जाति से लिया जाता है। इसमें आम ओर खास का कोई भेद नहीं। वहां सब एक हो जाते हैं। व्यक्ति एवं समाज के जीवन का मूल्यांकन एक ही स्तर पर किया जाता है।[2]

लोक संगीत से हमें प्राचीन संस्कृति की झलक मिलती है। लोक संगीत में साधारणत: दैनिक जीवन के कार्य और भाव निहित होते हैं जैसे प्रेम और वेदना, पर्व और मेले, शादी-ब्याह, फसल कटाई और बुनाई आदि। इस संगीत में बिना किसी प्रयास के खटका व मुर्की आदि नाद के सूक्ष्म तत्वों का प्रयोग स्वयं ही हो जाता है।

पंजाब के लोक संगीत की भाषा मृदु एवं आसान हैं पंजाब के ग्रामीण गीत स्वरों में खटकों और मुर्कियों के कारण सुनने वालों के मन में एक प्रकार की तड़पन पैदा कर देते हैं। ऐसा लगता है मानो स्वरों के द्वारा किसी से छेड़खानी की जा रही है।[3] पंजाब के लोक गीतों में उनकी संस्कृति एवं साहित्य की साफ झलक मिलती है। भारत का प्रत्येक प्रान्त अपने विशिष्ट लोक संगीत में धनी है। परन्तु पंजाब प्रान्त का लोक संगीत अपनी विशेषता के कारण समस्त भारत के गले का हार बना हुआ है।[4]

पंजाब अपनी संस्कृति के कारण विश्व प्रसिद्ध है। वैश्वीकरण के इस दौर में दुनिया का कोई भी ऐसा कोना नहीं जहाँ पंजाबियों ने अपनी विशेष पहचान ना बनाई हो। जहाँ भी गए अपनी बोली एवं संस्कृति साथ ले कर गए।

पंजाब के लोक गीत पंजाबी लोक साहित्य का प्रमुख अंग रहे हैं। पंजाब का लोक जीवन इनमें साफ धड़कता नज़र आता है। इनमें इतनी भिन्नता है कि शायद ही जीवन का कोई ऐसा विषय हो जिस बारे पंजाबी लोक गीत ना मिलता हो। लोक गीतों को हम सामूहिक कार्य स्वीकार करते हैं। जिसमें सम्पूर्ण समूह की भावनाओं को प्रकट किया गया होता है। यह जन समूह की आत्मा होते हैं जिस में उनके भावनाओं एवं जज़्बों को प्रकट किया गया है। व्यवहारिक रूप से देखें तो पंजाबी संगीत माझा, मालवा, दोआबा, पठिहार मुल्तान आदि पंजाबी स्थानों की लोक परम्परा का समूह है। इन सभी स्थानों के लोक संगीत प्रस्तुतीकरण में भिन्नता हैं जिसका सम्मलित रूप पंजाबी लोक संगीत है।

आरम्भ में यह किसी एक व्यकित की रचना होती है। परन्तु समय के साथ यह एक जन जाति के जीवन में अलिखित अमर परम्परा बन के समा जाती है। इस रचे गए संगीत में कई तबदीलियां आती रहती हैं एवं यह अपने मूल रूप को सुरक्षित रखता हुआ नित्य नए रंग प्रदान करता जाता है।[5]

पंजाबी संस्कृति में लोक संगीत का विशेष महत्त्व है। पंजाबी अपने जीवन का हर पहलू नाचते गाते हुए व्यतीत करता है। इस कारण उसके जीवन में जन्म से मृत्यु तक के सफर सम्बन्धी अनेकों गीत प्रचलित हैं जिनका गायन वह अलग-अलग संस्कारों उत्सवों मेलों एवं त्योहारों को मनाते हुए करता है।

आज पूरे विश्व में पंजाबी संगीत ने एक अपनी अलग एवं विशिष्ट जगह बना ली है केवल एक ढोल की धमक से मन खुशी से भर जाता है। वर्तमान समय में इसकी स्थिति दयनीय है।

पंजाब के लोक संगीत की बहुमूल्य विरासत जो सीना ब सीना बुजुर्गों से सुन कर अगली पीढ़ी तक पहुंची है। वह पता नहीं कब और कैसे हमारी जिन्दगी से निकल कर रह गई। लोक गीतों के वास्तविक स्वरूप हाथों में से रेत की भांति फिसल रहे हैं। लोक गीतों के शब्दों में परिवर्तन के नाम पर अश्लीलता, विकार भरी जा रही है। पाश्चात्य संगीत को रिमिक्स का नाम देकर लोक गीतों के अनुपम वास्तविक स्वरूप बिगड़ रहे हैं। पंजाब के लोकगीतों में पंजाबी के साथ अंग्रेजी शब्दों का अधिक प्रयोग पंजाबी भाषा में अंग्रेजी की घुसपैठ का सूचक है।

आज का पंजाबी लोक संगीत अपना मूल स्वरूप धूमिल करता हुआ नज़र आ रहा है। इसके कई कारण हैं। आजादी के बाद देश के विकास के लिए कई योजनाओं के निर्माण के तहत नए उद्योगों की स्थापना से सदियों से चले आ रहे पिता पुरखी धन्धे, कार्य एवं कलाएं आदि प्रभावित हुए। आकाशवाणी लाउडस्पीकर, फिल्म एवं इश्तहार आदि में जन साधारण को आज़ाद मुल्क में अपने हक के प्रति जागरुक किया। हिन्द पाक के बटवारे के समय भी लोक अपनी विरासत जद्दी पुश्ती धन्धे से दूर होते गए। ठीक इसी प्रक्रिया के अधीन हमारे लोकसंगीत की परम्परा भी प्रभावित हुई।

लोक संगीत परम्परा को सृजन एवं प्रफुलित करने वाले व्सवसायिक कलाकारों के अलावा घरेलू औरतें एवं युवक-युवतियाँ लोक गीतों को मौखिक रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी आगे चलाते हैं।

मानव की जिन्दगी में जन्म, विवाह और मृत्यु तीन महत्त्वपूर्ण पड़ाव हैं जिनके साथ मानव के उत्साह, शौक, खुशी और दु:ख सन्ताप की भावनाएं जुड़ी हुई हैं। इन मौकों पर मानव की मानसिक स्थिति को प्रकट करने वाले गीता का अमुक भंडार मिलता है।

आज देखने में आ रहा है कि लोकगीत का स्वरूप बदलता जा रहा है। लोक गीतों के बदलते परिपेक्ष सम्बन्धी चर्चा करते हुए दो प्रश्न पैदा होते हैं—

1. लोकगीतों की बनावट के बदलते परिप्रेक्ष।

2. लोकगीतों की पेशकारी के बदलते परिप्रेक्ष।

सर्वप्रथम यह देखना है कि किन परिस्थितियों में लोक गीतों की बनावट और प्रस्तुतीकरण होता था तथा उनका गायन समाज के किन मूल्यों को दर्शाता था।

यह तो हम सभी जानते हैं कि मानव ने काम की थकान को मिटाने के लिए जो गीत संगीत बनाया उसे ही लोक संगीत कहा गया। यह सच है कि मानव स्वभाव से ही परिवर्तन शील है। उसे हर पल परिवर्तन अच्छा लगता है। पर यह जरूरी तो नहीं कि भौतिक वादी युग में हम अपने लोक संगीत को पीछे छोड़ दें या उस को तोड़ मरोड़ कर पश्चिमी सभ्यता में रंग दें।

किसी भी प्रदेश का लोक संगीत उसकी संस्कृति का आइना होता है। जितने लोकगीत, लोक साज और लोक नाच गहने और रंग बिरंगे कपड़े हमारे पंजाब में देखने को मिलते हैं शायद ही किसी अन्य प्रदेश में मिलते हों। परन्तु पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव में हमारे लोक संगीत की दशा विचारणीय हैं।

पंजाब के लोक-संगीत की स्थिति यह है कि लोक-संगीत के नाम पर कुछ भी प्रस्तुत किया जा रहा है जो कि स्वीकार्य नहीं। सम्भवत: समाज का ढाँचा बदल चुका है।

ना पहले जैसी शादियां होती हैं और ना वो लोक गीत। आज चक्की के गीत, हल्दी के गीत आदि सभी लुप्त होते नजर आते हैं। हर रस्म रिवाज के गीत गा कर उस मौके की रौनक को बढ़ाते थे पर आज के पश्चिमी प्रभाव ने दूल्हा दुल्हन को ब्यूटी पारलर पहुँचा दिया है। वह ब्यूटी पारलर में भले ही चार-चार बार चले जाएंगे परन्तु घरों में वो किसी को अपने ऊपर हल्दी भी नहीं लगाने देते। ब्यूटी पारलर के अस्तित्व ने इन रस्मों और रीतिमूलक गीतों की समाप्ति में पूरा योगदान दिया है। कहने का तात्पर्य यह है कि आज के युग में अधिकांश रस्मों को निभाने का ना तो समय है और ना ही कोई सार्थकता। इसलिए इनसे सम्बंधित गीत भी लोगों के दिलों में लुप्त होते जा रहे हैं जो कभी लोक मनो के प्रतिबिम्ब थे। शादियाँ महीनों से हफ्तों, हफ्तों से सिकुड़ कर दिनों में खत्म हो जाती है। संगीत के नाम पर सिर्फ डी.जे. ही दिखाई देता है। बस डी.जे. लगा कर सब नाचने में ही अपनी खुशी व्यक्त कर लेते हैं। ना जाने पंजाबी सभ्याचार में कितने ही सुहाग और घोड़ियाँ हैं जिनको गा कर लोग अपनी भावनाओं को प्रकट करते थे और सब रिश्ते नजदीक नजर आते थे पर आजकल लोक गीत बनने तो दूर जो हैं हम उनका स्वरूप भी बिगाड़ रहे हैं।

एक समय था जब घर का सब काम औरतें स्वयं किया करती थीं। जैसे चक्की पीसना, मसाले कूटना, रुई कातना, कपड़ा बुनना, फसल बीजना, फसल काटना आदि। वो यह सब कार्य करती-करती ना जाने कितने ही लोक गीतों की रचना कर लेती थीं। वर्तमान मशीनी युग ने ये सब कार्य लगभग समाप्त ही कर दिए हैं। कुछ औरतें शिक्षित होकर व्यवसायों में पड़ गई उन्हें ये सब कार्य न करने का समय मिलता है और न उनसे होते हैं। वो खुद एक मशीन बन कर रह गई हैं। तो इस मशीनीकरण युग में हम लोक गीतों के बनने की सम्भावना कहाँ कर सकते हैं।

इसी तरह लोक गीतों की पेशकारी की स्थिति में भी काफी बदलाव नज़र आते हैं। आजकल के लोकगीतों की शब्दावली को बिगाड़ कर

पेश किया जाता है। आजकल गीत बनते हैं लोकगीत नहीं। और जो गीत गाए जाते हैं उनके साथ बजाए साजों में से जो ध्वनि पैदा होती है वो मन को सकून देने वाली नहीं बल्कि तनाव पैदा करने वाली होती हैं। लोक साजों को भी तोड़ मरोड़ कर इलैक्ट्रॉनिक बना दिया गया है। जो कि अपना मूल अस्तित्व पीछे छोड़ रहे हैं। उसी तरह लोक नृत्य का भी यही हाल है। लोग पश्चिमी धुनों पर थिरकना ही ज्यादा पसन्द करते हैं। लोकनाच को अपनाते हुए तौहीन महसूस होती है। अगर ऐसा ही होता रहा तो हम अपनी सभ्यता और संस्कृति भूल जाएंगे।

आज पंजाबी गीतों में शराब, बन्दूकें, लड़ाईयां और लड़के लड़कियों की आपसी बातचीत को आकार बनाकर गीतों की रचना हो रही थी। जिन्हें सुनकर पंजाबियों का शर्म से सर झुक जाता है। हमारे लोक साज सारंगी, बांसुरी, शहनाई, ढोल, अल्गोजे आदि रवायती साजो को छोड़ कर आज ड्रमसैट, कीबोर्ड सिन्थेसाइजर और गिटार जैसे साजो का प्रयोग किया जा रहा है। वर्तमान समय में मानवीय मूल्यों का तिरस्कार कर चुके हैं, तथा रिश्ते समाप्त हो गए हैं। पूर्व में सभ सगे-सम्बन्धी विवाह के समय एकत्रित होकर लोक-गीत गाया करते थे।

सुर और ताल दोनों संगीत के मूल तत्व है पर आज पंजाब के लोक संगीत में लय का तत्व बढ़ता जा रहा है। ऐसे लोक गायक इसी तेज लय के कारण प्रसिद्धी प्राप्त कर रहे हैं। चक्क दे फट्टे, तारा रारा, बल्ले-बल्ले की धुनें शोर शराब करती नजर आ रही हैं। पंजाबी स्वर संगीत में पश्चिमी शोर इतना तीखा है कि पंजाबी गीतों की मिठास लोप हो गई है। गीतों को गाते समय पहनावा और रहन-सहन अजनबी हो गया है। ऐसा संगीत भड़काऊ भावनाओं को जन्म देता है। गीतों को रिमिक्स करके गाने की प्रवृत्ति ही आज जोर पकड़ रही है।

वर्तमान समय में देखा जाए तो गीतों के साहित्यिक पक्ष में जहां विदेशी बोली का प्रभाव पड़ा है, वहीं इनकी गायकी पर विदेशी गायन शैलियों का भी प्रभाव पड़ा है जैसे- रैप, पौप इत्यादि। इनके साथ ही इनकी प्रस्तुतीकरण के समय निरर्थक शब्दों का प्रयोग एवं बेजोड़ आलाप, ताने, सरगमें, खटका मुर्की आदि का प्रयोग करके शास्त्रीय गायन अंग की प्रबलता भी दिखाई जाने लगी है।

इसके अलावा गायक कलाकार इन लोक गीतों की पेशकारी के समय सुगम संगीत की अन्य विधाओं जैसे गीत, गज़ल का प्रभाव भी लेने लगे हैं। जिनका प्रत्यक्ष प्रमाण हमें भिन्न-भिन्न शिक्षण संस्थाओं में करवाए जाने वाले मुकाबलों को जीतने की होड़ में देखने को मिल सकते हैं। शिक्षक एवं विद्यार्थी अपनी कला कुशलता दिखाने के लिए लोक गीतों की असल सहज एवं सरस धुन लय, ताल में परिवर्तन करके उसकी मौलिकता में बिगाड़ पैदा कर रहे हैं। कुछ लोग गीतों के आरम्भ में अलग-अलग शेयर लगाकर उसकी पेशकारी करके उसके असली स्वरूप को बिगाड़ रहे हैं।

''गुरपरताप सिंह गिल लोक गीतों सम्बन्धी एक अन्य समस्या की ओर इंगित करते हैं। एक गहरा मसला हमारे सामने खड़ा है, पंजाबी लोक गीतों में अशलीलता। आम लोगों के सुनने में ऐसे कई गीत आते है जो नंगे होते है जिनका समाज में गिरावट लाने के अलावाऔर कोई मकसद नहीं होता। उन गीतों को कोई भी परिवार में इक्ट्ठा बैठकर नहीं सुन सकता क्या इन अश्लील गीतों से हमारी पंजाबी सभ्यता को ठेस नहीं लगती क्या साहित्य में गन्दगी नहीं फै लती पंजाबियत में गिरावट नहीं आती अगर ऐसा है तो समाज के पढ़े लिखे विद्वानों को चाहिए कि इस प्रकार के साहित्य एवं सभ्यता को बिगड़ने से रोकें।''[6]

इस विषय में पंजाबी की प्रसिद्ध लोक गायिका गुरमीत बावा कहती है कि ''मैं लोक गीतों में ही शुरू होकर लोक गीतों में ही मर जाना चाहती हूँ। अगर हमारे लोक गीत मर गए तो हम भी मर जाएंगें। ये लोक गीत ही मेरे लिए सब कुछ है।''[7]

इतने बदलाव के बाद भी डॉ. गुरनाम सिंह का कहना है कि ''आज भी हजारों शुद्ध और खालिस लोक गायकों वादकों की कला पेशकारी के लिए मंच को तरसती अपनी गरीबी एवं तंगी में दम तोड़ रही है।''[8]

आज की पीढ़ी इन लोक गीतों को गाना तो दूर इनके नामों से भी परिचित नहीं है। क्योंकि वह उन सब रीति रीवाजों हस्त कार्यों रिशते नातों से अनजान हैं जिनके कारण लोक गीत जन्म लेते थे। उनके लिए परम्परागत लोकगीतों की कोई अहमियत ही नहीं।

लोक गीतों को गाने एवं प्रस्तुत करने के तौर तरीके बदल चुके है। ये गीत किसी शादी ब्याह के मौके खुशी साझी करने के साथ-साथ मन बहलाने का भी बड़ा साधन थे जिनका बड़ी शिदद्त एवं चाव से इन्तजार किया जाता था पर आधुनिक वैज्ञानिक युग में आज की पीढ़ी को ये गीत न तो आते और ना ही वह इसे मौखिक परम्परा द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ले जा सकते हैं। जब ये सुहाग और घोड़ियां छन्द सिट्ठनीया आदि नई पीढ़ी नहीं गा सकती तो पेशेवर गायकों द्वारा रिकार्ड किए गए गीत बज़ा कर इस कमी को पूरा किया जाता है। यह सच है कि ये गीत भी उतनी देर तक सुने जाएगे जब तक सुनने वालों को इसकी समझ होगी। जब तक इन्हें सुनने समझने वाली पीढ़ी जिन्दा है तब तक ये गीत जिन्दा रहेगें आज का युग मन्डी की कीमतों को समझने वाला युग है।

आज मानव का हर विचार हर व्यवहार पैसा कमाने के साधनों के साथ जुड़ा हैं आज ऐसी संस्थाएं भी देखने को मिल रही है जो संस्कृति के नाम को बेच रही है। पर दूसरी तरफ ऐसी संस्थाए भी है जो कि इसके संरक्षण के लिए पूर्ण रूप से कार्यरत हैं।

आधुनिक युग में गीतों की बनावट एवं पेशकारी जिस प्रकार हो रही है वह पश्चिमी सभ्यता या शैली से प्रभावित है। यह मानसिकता उनके अपने किसी अनुभव से पैदा नहीं हुई बल्कि यह सब मीडिया की देन है। आज मीडिया इतना प्रभावशाली साधन बन गया है कि वह जिसे चाहे मानव की जरूरत बना देता है। पूंजीवादी युग में हर चीज़ का जब व्यापारीकरण हो रहा हो तो हमारे गीत, नाच, खानपीन पहरावा अर्थात् समाज सभ्यता एवं संस्कृति भी इस को अपना रही है। इसके लिए केवल नई पीढ़ी ही जिम्मेदार नहीं है उन्होंने वो ही खाना है जो उन्हें परोसा जाएगा। सो ऐसे माहौल में कुछ ऐसे यत्न करने की जरूरत है

जिनके साथ नई पीढ़ी को सार्थक जीवन मूल्यों से जोड़ते हुए उन्हें इनकी सहजता की पहचान करने की सोच पैदा की जा सके।

निष्कर्ष रूप से यह कहा जा सकता है कि ऐसे हालातों में जब नए लोक गीत लोक नाच बन नहीं रहे पुरानों को हम संभाल कर नहीं रख रहे लोक नाच के नाम पर सिर्फ परिश्चमी धुनों पर नाचना ही बाकी रह गया है तो हमारे लोक संगीत का भविष्य क्या होगा। इसके लिए एक लोक चेतना आरम्भ की जाए। पंजाबी लोक साजों के मौलिक एवं शुद्ध स्वरूप पर आधारित शिक्षा प्रणाली शिक्षण संस्थानों में प्रारम्भ की जाए और सबसे ऊपर पंजाबी लोक संगीत गायन वादन एवं नृत्य परम्परा को स्वतंत्र रूप में पूर्ण मान्यता दी जाए। यूनिवर्सिटी में लोक संगीत सिखाने के लिए एक ऐसा केन्द्र होना चाहिए जिस में विद्यार्थी पूर्ण रूप से लोक गीत, लोक साज एवं लोक नृत्यों की शिक्षा ले सकें। आज का विद्यार्थी ही कल का कलाकार है। अगर आज का विद्यार्थी ही अपने संस्कृति और सभ्यता को जानेगा तभी वह अपनी आने वाली पीढ़ियों तक इसको पहुंचा सकेगा।

हमारा पंजाबी विरसा इतना समृद्ध है कि अगर हम ना चाहे तो कोई इसके साथ छेड़छाड़ नहीं कर सकता।

पाद-टिप्पणियाँ

1. रन्धाव, महिन्द्र सिंह, पंजाब दे लोकगीत, पृ. 9
2. नन्दा, रश्मि, उत्तर भारत के लोक नाच, पृ. 39
3. श्रीवास्तव, हरिवंश, संगीत निबंध-संग्रह, पृ. 6
4. पेंतल, गीता, पंजाब की संगीत परम्परा, पृ. 32
5. नन्दा रश्मि, उत्तर भारत के लोकनाच, पृ. 45-46
6. गिल, गुरपरताप सिंह, पंजाबी दीया लोक धुनां,पृ. 99
7. साक्षात्कार, गुरमीत बाबा
8. साक्षात्कार, गुरनाम सिंह

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

रन्धावा महिन्द्र सिंह, पंजाब दे लोकगीत - लुधियाना लाहौर बुक शॉप 1955

नन्दा रश्मि, उत्तर भारत के लोक नाच, चंढीगढ़ लोक गीत प्रकाशन, 2012

श्रीवास्तव, हरिवंश, संगीत निबन्ध संग्रह, इलाहाबाद साउथ हाल, 1974

पेंतल, गीता, पंजाब की संगीत परम्परा दिल्ली, राधा पब्लिकेशन्स 1998

नन्दा, रश्मि, उत्तम भारत के लोकनाच, चंढीगढ़, लोक गीत प्रकाशन, 2012

गिल, गुरपरताप सिंह, पंजाबी दीया लोक धुनां पटियाला, पंजाबी यूनिवर्सिटी, 1984

साक्षात्कार

गुरमीत बाबा—यह साक्षात्कार खालसा कालेज फार विमेन, अमृतसर द्वारा आयोजित पंजाब के लोक संगीत का बदलता स्वरूप शीर्षक पर सेमिनार में 9 फरवरी 2013 में व्यक्त किए विचार।

गुरनाम सिंह—यह साक्षात्कार खालसा कालेज फार विमेन, अमृतसर द्वारा आयोजित पंजाब के लोक संगीत का बदलता स्वरूप शीर्षक पर सेमिनार में 9 फरवरी 2013 में व्यक्त किए विचार।